सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 152

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 35-36
दिसम्बर – 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

"श्री दत्त जयंती उत्सव"
"13 दिसम्बर"

गुरूबंधुभगिनियों से

संपूर्ण मानव जाति इस दुनिया में सुख शांति समाधान से तथा आपसी प्रेम से रहे, इसलिए परमात्मा का लोक कल्याण का कार्य सदियों से चल रहा था जो कि इस युग में प.पू. साई बाबा के रूप में पूर्ण हुआ है। इस कार्य के लिए समय के तथा समाज के अनुसार परमात्मा ने अनेक अवतार लिए हैं। श्री राम, श्री कृष्ण, क्राईस्ट, गौतम बुद्ध, पेग्बंर साहब इत्यादि सब ईश्वर के अनेक अवतारों के अवतार हैं। यद्यपि ये अनेक अवतार एक ही ईश्वर के अवतार होकर भी इनके शिष्य परिवारों ने उन्हें अपने अपने धर्म, पंथ और जाति तक ही सीमित रखने के कारण मानव जाति में आपस में प्रेम का निर्माण करने का कार्य नहीं किया और संपूर्ण विश्व में धर्म, पंथ और जाति के झगड़े बढ़ कर संपूर्ण विश्व में दुश्मनी और दुश्मनी के कारण बरबादी छा गई। इस बरबादी से मानव जाति को बचाने के लिए इस कलियुग में ईश्वर ने फिर से अवतार लिया, प.पू. साई नाथ महाराज के रूप में यानी हर एक के बाबा, हर एक के माता, पिता, भाई, दोस्त तथा गुरु यानी श्री जगद्गुरु साई नाथ महाराज।

प.पू. साई बाबा के अवतार कार्य के दो ही तत्व हैं।

1. ईश्वर सर्वत्र है और ईश्वर एक है यानी सबका मालिक एक है।
2. सबसे प्रेम करना यह मानव का धर्म है। मानव से प्रेम करना ईश्वर की ही पूजा है क्योंकि ईश्वर सभी मानवों में है।

प.पू. साई बाबा ने अपने जीवन काल में भक्तों को अनेक देवीदेवताओं के रूप में दर्शन दे कर यही संदेश दिया है कि सभी देव

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

देवता वास्तव में मेरे ही रूप हैं, जो कि समय समय पर पिंड को जो जो आवश्यकता थी वह पूरा करने के लिए मेरे द्वारा लिए रूप हैं। इसलिए सभी अवतार वास्तव में एक ही हैं इसलिए उनके शिष्यों को तथा भक्तों को आपसी बैर का त्याग करके आपस में प्रेम रखना चाहिए।

अपने जीवन काल में अनेक चमत्कार करते समय खुद को यादभक्त, ईश्वर का भक्त कहला कर प.पू. बाबा ने भक्तों को ईश्वरी शक्ति की प्रचीति दी और यह सीख दी कि मनुष्य का प्राप्त जीवन ईश्वर के बिना अधूरा है और प्राप्त जन्म में ईश्वर को प्राप्त करने में ही मनुष्य का जीवन सार्थक है। तथा ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वन में तपश्चर्या करते रहने की आवश्यकता नहीं है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, जलन ईर्ष्या को काबू रख कर प्रपंच के कर्तव्य प्रेम से पूरे करते समय यही परमार्थ करके मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

ईश्वर की प्राप्ति के लिए मनुष्य का जीवन विकसित होने के आडे, मनुष्य के दोष आते हैं, जो जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है, तब से मनुष्य के जीवन में हुई गलतियों के कारण मनुष्य के पूर्व जन्मों के दोष हैं। इन दोषों में सब से प्रखर दोष है वंश का दोष फिर जन्मजन्मातंर का दोष फिर इतरेजन का दोष। और इन तीनों के साथ मनुष्य के पूर्व जन्मों में उससे उसके जिन ऋणानुबंधों की पूर्तता नहीं हुई होगी, वे ऋणानुबंध के दोष भी होते हैं। मनुष्य के इन दोषों का निराकरण द्वारा निवारण करने की पद्धति प.पू. बाबा ने वं. दादाजी के माध्यम द्वारा निर्माण की है और इस कार्य की पूर्णता करने के लिए इस कार्य में सभी देवदेवता तथा पुण्य विभूतियाँ सम्मिलित हैं। वं. दादाजी देह रूप में साक्षात बाबा ही हैं। वं. दादाजी के रूप में प.पू. बाबा ने जो कार्य किया है, यह कार्य आज भी विश्व में पूर्णरूप में साकार है और उसकी प्रचीति आने वाले समय में धरती पर जन्म लिए हर मनुष्य को मिलती रहेगी। इस कार्य के लिए केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में वं. दादा बाबा द्वारा कोई ना कोई साधन हो रहा है। यह लाभ आने वाली पीढ़ियों को होता रहे इसलिए जगह जगह गुरु कार्य के अनेक कार्यकेंद्र बनाए गए हैं। इन कार्यकेंद्रों पर गुरुशक्ति केंद्रित है इसलिए इन्हें केंद्र कहा जाता है। ये कार्यकेंद्र ना ही मानवों की इच्छा से बनते हैं और ना ही ये मानवों के कार्यकेंद्र हैं ये कार्यकेंद्र गुरुकृपाशीर्वाद के कार्यकेंद्र हैं।

दुख तथा समस्या के कारण इन कार्यकेंद्रों पर कामकाज के लिए आए भक्तों को गुरुकृपा से निराकरण का लाभ प्राप्त होकर उनके दुखों का तथा दुखों के कारणों का यानी दोषों का निवारण होता है और यह लाभ जैसे मुझे प्राप्त हुआ है वैसे औरों को भी प्राप्त हो इस सद्हेतु से वे उन्हें भी कार्यकेंद्र पर लाते है और इस प्रकार वं. दादा बाबा के परिवार के सदस्य बढ़ते रहते हैं। कार्यकेंद्र पर गुरुभक्तों के दोषों का निवारण करके तथा उनका जीवन विकसित करके वं. दादा बाबा ने चौथी अवस्था यानी नारायणी अवस्था वं. दादाजी के माध्यम से कराई है, इसके साधक कार्यकेंद्र पर चार आयाम (Dimension) की मूर्ति के बजाए रखे 2 आयाम (Dimension-) के फोटो की उन्हें तीसरे आयाम (Dimension) की शक्ति के रूप में सेवक के माध्यम से वं. दादाजी ने प्रवाहित की।

प्रत्येक इन्सान को अपने आचार-विचार-उच्चार अपने काया-वाचा-मन से एकरूप करना आवश्यक होता है, जिससे मनुष्य को सुख शांति समाधान की प्राप्ति के साथ साथ ऐहिक और पारमार्थिक लाभ प्राप्त होकर उन्हें ॐकार साधना की पूर्ण प्राप्ति होगी।

इसके लिए प.पू. बाबा दादा के दिए चार सिद्ध साधन कार्यकेंद्र पर कार्यरत हैं :–

1. **प्रार्थना** :– जन्म लेने वाले सभी धर्म जाति के हर इंसान के साथ पूर्वजन्मों के दोष होते ही

हैं। पूर्वजन्मों के उन दोषों का निवारण होना, इस प्राप्त जन्म में उन दोषों की पुनरावृत्ति ना होना तथा अगले जन्मों का प्रबंध इसी जन्म में होना ये लाभ नित्य नियम से हर रोज प्रार्थना करने से होतें हैं। यह प्रार्थना अपने आप में निराकरण भी है।

2. **आरती** :– श्री पंत महाराज जी ने श्री दत्तगुरु की अथक भक्ति करके उनकी जो कृपा प्राप्त की वह उन्होंने शब्द ब्रह्म के रूप में इन आरतियों में सम्मिलित की है और दत्त महाराज की इस कृपा का लाभ श्री पंत महाराज जी ने वं. दादा जी को दिया है। इसलिए वं. दादा जी द्वारा इन आरतियों की बनाई धुन के साथ आरतियाँ गाने से श्री दत्त महाराज जी की कृपा के कारण भक्तों के मन में भक्तिरस निर्माण होकर वें आरती में तल्लीन होते हैं और उनके मन के कुविचार जाकर मन में सुविचार निर्माण होते हैं।

3. **मुलाकात** :– यह साधन दो लोकों के लिए हैं 1. इहलोक और 2. परलोक। परलोक का ज्ञान इहलोक और इहलोक का ज्ञान परलोक को। इसलिए मुलाकात यह साधन है। मुलाकात द्वारा गुरुकृपाशीर्वाद का तत्व मानव जाति से हितसंबंधित होता है। मुलाकात द्वारा गुरुकृपा से मानव जाति के उद्धार का कार्य होता है।

4. **साधना** :– नित्य नियमितता से एकाग्र होकर, Scale से (परिमाणानुसार) साधना से ये लाभ होते हैं। 1. खुद का विकास 2. परोपकार का रास्ता और 3. अगला जीवन ईश्वर स्वरूप होना।

इन साधनों के लाभ से सबसे पहले हमारे शरीर की उन्नति होती है, पंचमहाभूत तत्वों में होती रही कमी की पूर्तता होकर उनका प्रमाण सुसंबद्ध होता है, कोषों की शुद्धता होकर वे विकसित होते हैं, वाणी की सिद्धता होती है।

आज के दिन इन्सान की देह के 19 माध्यमों के दोष ही उसके आज के दुखों के कारण हैं वें दोष कम होकर इन्सान के दुख का समाधान होना जो कि आज पूजा पाठ से ना होकर इन साधनों के लाभ से प्राप्त हो रहे गुरुकृपाशीर्वाद से अवश्य होगा यह निश्चित है।

आज हम सब यहाँ श्री दत्तजयंती मनाने के लिए उपस्थित हुए है तथा उनकी पहचान करने के लिए –

प्रयाग (इलाहाबाद) यहाँ गंगा, यमुना, सरस्वति इन तीन नदियों का त्रिवेणी संगम है। इन तीन नदियों का पानी पवित्र माना जाता है। इसी तरह दत्त, नाथ, सूफी इन तीन पंथों का त्रिवेणी संगम होकर आपको कारणदीक्षा दी गई है।

अब आपके द्वारा कारणदीक्षा का लाभ दुनिया को होना और जीव अवस्था का स्थित्यंतर होना यह इन तीनों पंथों का हम पर उपकार है

आपका कोई एक नाम है परन्तु दत्त, नाथ, सूफी इन तीन पंथों ने आपको पहचान दिलाई है।

जगत की उत्पत्ति से ही इन तीन पंथों द्वारा लोक कल्याण का काम जारी है। (चल रहा है)। मानवों का कल्याण हो और जीव का रूपांतर शिव में हो इस उद्देश्य से यह परोपकार का कार्य हो रहा है।

उत्पत्ति, स्थिति, लय इन तीनों शक्तियों को धारण करके, उनको एक करके वो चौथी शक्ति (नारायणी प्रतिमा) द्वारा प्रवाहित की। जो कार्य सिर्फ गुरु माध्यम द्वारा ही हो सकता है जिसको श्री जगदगुरु साई नाथ महाराज तथा वं. दादाजी ने अथक परिश्रम करके मानव जाति के लिए सिद्ध किया। श्री गुरु ही जीव का रूपान्तर शिव में कर सकते हैं।

दत्तपंथ	–	उत्पत्ति	–	20 % लोग अनुयायी
नाथपंथ	–	स्थिति	–	50% लोग अनुयायी
सूफी पंथ	–	लय	–	100% लोग अनुयायी

इन तीन शक्तियों का एक करके गुरु चौथी शक्ति निर्माण करते है। यही दादा महाराज का कार्य आज चल रहा है।

दत्त पंथ को अवधूत पंथ भी कहते है। दत्तपंथ का अनुग्रह लेकर उसके अनुसार आचरण करना बहुत कठिन है। दत्तपंथ के यम–नियम कठिन है। दत्तपंथ के अनुसार दादाजी ने 2 ½ साल औंदुबर में सेवा की है। उसके पहले '24 घंटो के अंदर नौकरी छोड़ो' ऐसी आज्ञा हुई थी। क्योंकि भिखारी हुए बगैर दत्तपंथ में कुछ नहीं मिलता। इसमें आपकी कठिन परीक्षा लेकर ही आपको दीक्षा देते है।

सूफीपंथ का ब्रीद – अगर आप अनन्यभाव से शरण जाते हो तो ही आप सनाथ होते हो।

इन तीनों पंथों ने मानवों को सज्ञान करने का कार्य किया है। इन तीनों पंथों का सार करके यह 'कारणदीक्षा' आप भक्तों को दी है। अब यही कार्य (मानवों को सज्ञान करने का) इस कारणदीक्षा द्वारा आगे आने वाले समय में आपको करना है इसलिए इन तीनों पंथों का संगम (एकत्रीकरण) किया है।

हम अनाथ है। शरण आने के बाद सनाथ यानी ज्ञानी करने का काम गुरु का है।
गुरुसेवा में (ईश्वर का) ध्यान करने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण अवधान रखना है।
आरतियाँ – दत्ता दया करी, दया करी .....
दत्ताचे पायी आम्ही .....
शेवट गोड करी .....

इन आरतियों से सब गुरुभक्तों को अवधान का मार्ग अपनाना चाहिए।

।। शुभ भवतु।।

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561
E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com
Please send your yearly subscriptions as early as possible